e-ISJN: A4372-3069
ISSN: 2455-443X
Research Inspiration
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Access & Indexed)
www.researchinspiration.com
Email: researchinspiration.com@gmail.com, publish1257@gmail.com
Vol. 2, Issue-II
March 2017
Impact Factor : 4.012 (IIJIF)

# शाक्त पुराणों में नारी के संस्कार

**डॉ. लता देवी**
सहायक आचार्य
संस्कृत-विभाग, हि.प्र.विश्वविद्यालय समरहिल शिमला-171005

**संक्षेपिका**

*पौराणिक नारियों के पुरूषों की भान्ति जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त अनेक संस्कार किये जाते थे इसका उल्लेख किया गया है। संस्कारों का नारी जीवन में भी अत्यन्त महत्त्व था। भले ही पुराणों में नारियों के लिये किये जाने वाले पूरे सोलह संस्कार नहीं पाये जाते हैं परन्तु विवाह, गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्यन, जातकर्म, नामकरण, अन्त्योष्टि इत्यादि संस्कारों का वर्णन किया गया है। इन संस्कारों में से नारियों के लिए सम्पन्न किये जाने वाले संस्कारों में से विवाह संस्कार का विशेष महत्त्व था।*

## पुराण शब्द का अर्थ

भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों ने पुराण शब्द का सामान्य अर्थ पुराना स्वीकार किया है। अमर कोश में पुराण के पर्याय शब्दों में पुराण 'पंचलक्षणम्' दो नाम स्वीकार किये हैं। अमर कोश के व्याख्याकार भानुजी दीक्षित ने पुराण उस शास्त्र को कहा जो पहले हुआ, अथवा पहले होकर भी जो नवीन या पहले ही भूत के साथ भविष्य के अर्थों का कथन करने वाला हो।

प्राचीन काल से ही हिन्दु समाज में संस्कारों का विधान रहा है। जीवन में संस्कारों की संयोजना इसलिए की गई कि मनुष्य का वैयक्तिक और सामाजिक विकास हो सके। किसी नर या नारी के असंस्कृत स्वरूप को सुसंस्कृत और अनुशासित करने के लिए संस्कार बनाए गए। शुद्धता, आस्तिकता, धार्मिकता और पवित्रता संस्कार की प्रधान विशेषाताएं मानी गई हैं। अतः संस्कार का आधार धर्म है, जिसके माध्यम से कोई भी नर या नारी अपने जीवन को उन्नत, परिष्कृत और सुसंस्कृत बनाता है।

## संस्कार का अर्थ

संस्कार का साधारणतः अर्थ शुद्धि अथवा स्वच्छता से है। संस्कार शब्द 'कृत' धातु में 'ध' प्रत्यय के योग से व्युत्पन्न होता है जिसका अर्थ शुद्धता से है। अंग्रेजी का 'सैक्रामेंट' शब्द संस्कार के लिए प्रयुक्त होता है, जिसका अर्थ है, ''धार्मिक विधान''। संस्कार व्यक्ति के शारीरिक, सामाजिक, बौद्धिक और धार्मिक परिष्कार के निमित्त वह धार्मिक क्रिया है जो विशुद्ध पवित्र अनुष्ठापन में आस्था रखती है। इन विविध क्रियाओं को करने से मनुष्य समाज का पूर्णतः अंग बन जाता है।

e-ISJN: A4372-3069 ISSN: 2455-443X
Research Inspiration
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Access & Indexed)
www.researchinspiration.com
Email: researchinspiration.com@gmail.com, publish1257@gmail.com
Vol. 2, Issue-II
March 2017
Impact Factor : 4.012 (IIJIF)

### संस्कार का स्वरूप

मनुष्य का सम्पूर्ण जीवन संस्कार से घिरा रहा है जन्म से लेकर मृत्यु तक सारा जीवन विभिन्न संस्कारों से शुद्ध और पवित्र होता रहा है। पौराणिक काल में संस्कारों को सम्पन्न किये बिना किसी भी नर-नारी का जीवन अपवित्र, अपूर्ण और अव्यस्थित माना जाता था। जीवन को विविध बाधाओं से दूर रखना संस्कारों का मूल उद्देश्य रहा है। इन संस्कारों को करने में हवन और अग्नि की सबसे अधिक आवश्यकता मानी जाती रही है। संस्कार के अर्न्तगत देवताओं की स्तुति, प्रार्थना और उनके निमित्त यज्ञ किये जाते थे। अप्रत्यक्ष रूप से मनुष्य के जीवन में बाधित करने वाले अमानवीय या अप्राकृतिक या राक्षसी बाधाओं को दूर करने हेतु ही संस्कारों का उद्भव और विकास हुआ था।

### सोलह संस्कार

यद्यपि धर्मशास्त्रकारों में संस्कारों की संख्या के विषय में मतभेद रहा है।

### इत्येते चत्वारिशत्संस्काराः[1]

किन्तु सभी ने गर्भाधान, पुंसवन 16 प्रमुख संस्कार माने हैं। सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म, कर्णवेध, विद्यारम्भ उपनयन वेदारंभ, केशांत समावर्तन, विवाह और अन्त्येष्टि। उपर्युक्त संस्कारों में केवल कुछ ही संस्कार नारी जाति के लिए सम्पन्न किये जाते थे।

### शाक्त पुराणों में नारियों के लिए संस्कार का विधान

यद्यपि वैदिक काल से ही नारियों द्वारा किये जाने वाले संस्कारों का विधान रहा है किन्तु शाक्त पुराणों में उपर्युक्त सोलह संस्कारों में से कुछ ही संस्कारों का निरूपण मिलता है जो नारियों द्वारा सम्पन्न किये जाते हैं-

### विवाह संस्कार

मानव जीवन में विवाह एक महत्त्वपूर्ण संस्कार ही नहीं अपितु मानव-समुदाय में एक महान् सामाजिक घटना भी है। विवाह आरम्भ करने से पूर्व उसका मुहूर्त्त निकलवाया जाता था और विवाह शुभ दिन और शुभ लग्न में सम्पन्न करवाया जाता था। विवाह संस्कार-वधू के घर में ही सम्पन्न होता था। वर और वधू के विवाह सम्बन्धी जितने भी धार्मिक कृत्य होते थे वे सब एक ही स्थान पर सम्पन्न होते थे। वहाँ पर एक वेदी का निर्माण कराया जाता था जिसे मण्डप भी कहते थे। वर को भी मण्डप तक लाने से पूर्व वस्त्रों, भूषणों से सुसज्जित किया जाता था। विवाह संस्कार में पाणिग्रहण एक महत्त्वपूर्ण क्रिया होती है। दूसरे शब्दों में पाणिग्रहण संस्कार को ही एक तरह का विवाह संस्कार का आधार माना जा सकता है। वर के साथ वधू का पाणिग्रहण कर देने के पश्चात् अग्नि की परिक्रमा की जाती थी। विवाह संस्कार वैदिक रीति से सम्पन्न होते थे। शंकर जी का पार्वती से

e-ISJN: A4372-3069 ISSN: 2455-443X
Research Inspiration
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Access & Indexed)
www.researchinspiration.com
Email: researchinspiration.com@gmail.com, publish1257@gmail.com
Vol. 2, Issue-II
March 2017
Impact Factor : 4.012 (IIJIF)

विवाह भी वैदिक विधि से अग्नि संस्थान पूर्वक सम्पन्न किया गया था।[2] पुरोहित लोग विवाह का सम्पूर्ण धार्मिक कृत्य करते थे।[3] वर-वधू लाज की आहुति देते थे। इसके पश्चात् वे अग्नि की परिक्रमा करते थे। राजा ताल-ध्वज् ने अग्नि को साक्षी बनाकर उसकी प्रदाक्षिणा करते हुए विवाह किया था-

**विवाह विधिना राजा शुभे लग्ने शुभेदिने।**
**उपयेमे च माम् तत्र हुतभुक्सन्निधौ ततः।।**[4]

**गर्भाधान संस्कार**

जिस संस्कार के द्वारा पुरूष अपनी पत्नी में बीज की संस्थापना करता है। उसे गर्भाधान संस्कार कहते हैं। भारतीय संस्कृति के अनुसार पति-पत्नी का संयोग केवल काम सुख के लिए नहीं होता अपितु उसका मुख्य उद्देश्य सन्तानोत्पत्ति होता है। पुराणों में नारियाँ पति की मृत्यु के पश्चात् गर्भाधान करने के लिए परपुरूष का संसर्ग भी किया करती थी। जिसे 'नियोग प्रथा'[5] कहते थे। इस काल में इस प्रथा को बुरा भी समझा जाने लगा था।[6] ऐसे मुनियों की निन्दा की गई है जिन्होंने इस प्रथा को शुरू किया था।

तत्कालीन समाज में सन्तानहीन नारियों को निन्दनीय समझा जाता था जिस नारी के यहाँ सन्तान उत्पन्न नहीं होती थी उसे काकवंध्या तथा जिस स्त्री के सन्तान उत्पन्न होकर मर जाती थी उसे मृत्वत्सा कहा गया था।[7] पुराणों में वास्तविक गर्भधारिणी उसे माना जाता था जो ज्ञानोपदेश से सन्तान को गर्भवास से मुक्त करती है।[8]

इस प्रकार माता अपने बच्चे के प्रत्येक कार्य में सक्रिय भाग लेकर महत्त्वपूर्ण भूमिका निर्वाह करती थी। पिता तो केवल गर्भाधान के लिए उत्तरदायी होता था।[9]

**पुंसवन संस्कार**

जब स्त्री गर्भवती होती थी तो गर्भ के तीसरे महीने 'पुंसवन संस्कार' का आरोपण किया जाता था यह संस्कार पुत्र उत्पत्ति के निमित्त निष्पन्न किया जाता था-

**पुंसवनमिति कर्मनामधेयं येन कर्मणा।**
**निमितेन गर्भिणी पुंसामेव सूते सत्पुंसवनम्।।**[10]

पुराणों में भी यही उल्लेख है कि तेजस्वी पुत्र की प्राप्ति के लिए यह संस्कार होता था।[11] देवी भागवत पुराण में भी एक स्थान पर सन्दर्भ आता है कि राजा हरिशचन्द्र ने भी अपनी पत्नी शैसा की गर्भावस्था में यह संस्कार किया था।[12] यह प्रमाण स्त्रियों के पुंसवन संस्कार सम्पन्नता का द्योतक है।

e-ISJN: A4372-3069 ISSN: 2455-443X
Research Inspiration
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Access & Indexed)
www.researchinspiration.com
Email: researchinspiration.com@gmail.com, publish1257@gmail.com
Vol. 2, Issue-II
March 2017
Impact Factor : 4.012 (IIJIF)

### सीमन्तोन्यन संस्कार

यह संस्कार स्त्री की गर्भावस्था में होने पर होता था। साधारणतः यह संस्कार गर्भ के चौथे महीने आयोजित होता था। जब स्त्री गर्भिणी होती है तब उस पर अनेक विघ्न-बाधाएं आती हैं, जो उसे डराकर गर्भ का विनाश कर देती है। अतः इन दुष्ट शक्तियों और बाधाओं से गर्भिणी स्त्री की रक्षा के लिए किया जाता था। पुराणों में भी सीमन्तोन्यन संस्कार का उल्लेख मिलता है कि गृहस्थ को यह संस्कार करते समय नान्दीमुख नामक पितरों की पूजा करनी चाहिए-

**सीमन्तोन्नयने चैव पुत्रादिमुखदर्शने।**
**नान्दीमुखं पितृगणं पूजयेत्पयतो गृही।।**[13]

देवी भावगत पुराण में भी उल्लेख मिलता है कि जब रौप्या गर्भवती हुई तो राजा हरिशचन्द्र ने रानी का सीमन्तोन्यन संस्कार करवाया था।[14] इससे ज्ञात होता है कि स्त्रियों के गर्भावस्था में कुछ संस्कार सम्पन्न किये जाते थे।

### जातकर्म संस्कार

बच्चे के जन्म होते ही ये संस्कार किया जाता है। सर्वप्रथम पति प्रसवपीड़िता प्रसूता पर मन्त्र पढ़कर जल छिड़कता है। अभी बच्चे की नाल नहीं कटी होती है कि दो क्रियाएं की जाती है।

1. मेधाजनन
2. आयुष्य

मेधाजनन से अभिप्राय यह है कि इस क्रिया में बच्चे का पिता सुवर्ण 'अंगूठी' से आच्छादित अपनी अनामिका उंगली से मधु तथा धृत अथवा धृत बच्चे को चटाता है ताकि बच्चा आगे चलकर मेधावी हो। आजकल भी इस क्रिया का प्रचलन देखा जाता है।

आयुष्य से अभिप्राय यह है कि बच्चे के दाहिने कान में 'अग्निरायुष्मान्' आदि मन्त्र का पाठ किया जाता है। यह क्रिया अधिकतर बच्चे की होती है। इसका उल्लेख देवी भागवत पुराण में भी मिलता है कि नगरपति तुर्वसु ने अपने पुत्र का जातकर्म आदि संस्कार किया।

पुराणों में बालकों की भान्ति कन्याओं का भी जातकर्म संस्कार किया जाता था। राजा रैभ्य ने अपनी स्त्री रूक्मरेख सहित अपनी कन्या का जातकर्म संस्कार किया।[15] उन्होंने अपने औरस पुत्र के जन्म की खुशी की भान्ति कन्या के संस्कारों पर यज्ञ किया और ब्राह्मणों को दक्षिणा देकर विदा किया। उन्होंने पुत्र जन्मोत्सव की भान्ति कन्या का उत्सव किया।[16]

e-ISJN: A4372-3069 ISSN: 2455-443X
Research Inspiration
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Access & Indexed)
www.researchinspiration.com
Email: researchinspiration.com@gmail.com, publish1257@gmail.com
Vol. 2, Issue-II
March 2017
Impact Factor : 4.012 (IIJIF)

**नामकरण संस्कार**

शिशु के जन्म के दसवें दिन सूतिका को सूतिकागृह से उठाकर स्नान आदि द्वारा शुद्ध करके तीन ब्राह्मणों को भोजन करा देने के बाद पिता बच्चे का नाम रखता था। नामकरण संस्कार पर उत्सव कराया जाता था तथा पाचकगणों को दान दिया जाता था इसका उल्लेख तुर्वसु ने अपने पुत्र का नाम एकवीर रखा और उस अवसर पर राजभवन में बाजे बजवायें तथा याचकों को दान-दक्षिणा दी।[17] इसी प्रकार एकावली के पिता रैम्भ ने भी अपनी पुत्री के संस्कारों के अवसर पर अनेक मांगलिक कार्य किये।[18] उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि बालक और बालिकाओं दोनों का नामकरण संस्कार किया जाता था। कुछ जातियों में आज भी इस संस्कार का विधान मिलता है।

**अन्त्येष्टि संस्कार**

मरने पर अन्त्येष्टि संस्कार किया जाता था जो मनुष्य के जीवन का अन्तिम संस्कार था। इस संस्कार के माध्यम से मृत प्राणी परलोक में शान्ति प्राप्त कर सकता है। पुराणों में भी अन्त्येष्टि संस्कार का वर्णन मिलता है उनमें कहा है कि मृत शरीर को स्नान कराकर, पुष्पमाला से विभूषित कर, गाँव के बाहर जलाकर, जलाशय में स्वस्त्र स्नान कर जलांजलि अर्पित करनी चाहिए। अशौच के अन्त विषय संख्या में ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिए।

**प्रतदेहं शुभैः स्नानैस्नापितं स्रग्विभूषितम्।**
**दाहवा गामाद्वहिः स्नात्वा स चैलस्सलिलाशये।।**[19]

यह संस्कार पुरूषों की भान्ति ही नारियों का भी किया जाता था। पुराणों में भी इसका उल्लेख मिलता है मनोरमा ने जब योग द्वारा शरीर का त्याग किया तो राजा ने मनोरमा की भी अन्त्येष्टि क्रिया की। उन्होंने चन्दन की लकड़ी से दिव्य चिता तैयार की और पुत्र द्वारा अग्नि संस्कार कराकर उसका दाह कराया फिर मनोरमा के पुण्य के निमित्त हर्षपूर्वक ब्राह्मणों को नाना प्रकार के रत्न, भान्ति-भान्ति के वस्त्र और अनेक तरह के दान दिये।

**संस्काराग्नि कारयित्वा पुत्रद्वारा ददाह ताम्।**
**नानाविधानि रत्नानि ब्राह्मणेभ्यो ददौ मुदा।।**
**नानाविधानि दानानि वस्त्राणि विविधानि च।**
**मनोरमायाः पुण्येन ब्राह्मणेभ्यो ददौ मुदा।।**[20]

हिन्दू परिवारों में आज भी अन्त्येष्टि संस्कार इसी विधि से सम्पन्न किया जाता है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि तद्कालीन नारियों के पुरूषों की भान्ति विभिन्न संस्कार सम्पन्न किये जाते थे। आज भी इन संस्कारों का नारी जाति में प्रचलन दिखाई देता है जैसे नामकरणादि संस्कार।

e-ISJN: A4372-3069 ISSN: 2455-443X
Research Inspiration
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Access & Indexed)
www.researchinspiration.com
Email: researchinspiration.com@gmail.com, publish1257@gmail.com
Vol. 2, Issue-II
March 2017
Impact Factor : 4.012 (IIJIF)

## निष्कर्ष

पौराणिक नारियों को पुरूषों की भान्ति जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त अनेक संस्कार किये जाते थे इसका उल्लेख किया गया है। संस्कारों का नारी जीवन में भी अत्यन्त महत्त्व था। पुराणों में नारियों के लिए किये जाने वाले पूरे सोलह संस्कार नहीं पाए जाते हैं परन्तु विवाह, गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्यन, जातकर्म, नामकरण, अन्त्येष्टि इत्यादि का प्रचलन था।

उपर्युक्त संस्कारों में से नारियों के लिए सम्पन्न किये जाने वाले विवाह संस्कार का विशेष महत्त्व था। विवाह सम्बन्धी सभी धार्मिक कार्य मण्डप में किये जाते थे। मण्डप को केलों के पत्तों और फूलों इत्यादि से खूब सजाया जाता था।

## सन्दर्भ-सूची

1. गो. ध. सू. -1/8/22
2. ब्र. वै. (श्री कृष्ण जन्म खण्ड-पूर्वार्ध)-45/1
3. देवी भागवत, 3/21/8
4. वही, 6/29/11
5. वही, 2/6/53-57
6. वही, 2/1/2
7. वही, 4/3/50
8. वही, 9/48/65
9. देवी भागवत में नारी-पृष्ठ-83
10. अग्नि. गृ. सू., 14/8
11. वायु पुराण, 96/12, ब्रह्माण्ड पु., 3/91/12
12. देवी भागवत्, 7/14/52
13. वायु पुराण, 3/13/6
14. देवी भागवत्, 7/14/52
15. वही, 6/21/50
16. वही, 6/21/53
17. वही, 6/21/52
18. वही, 6/21/51
19. विष्णु पु., 3/13/7-8
20. ब्र. वै. पु., (गणपित खण्ड) 35/19-20